SMT. HANSA MEHTA LIBRARY

APPENDIX-A

EPIGRAPHS AND COLOPHONS

CHAPTER-I : INTRODUCTION

End Note No 41

- श्रीखाणदेशे धरणग्रामचैत्याले श्री आचार्यजी देवसेनजी ओसवाल ज्ञातेसा कल्याणचंदसा भार्या दगडुबाई तत्पुत्र आदुसाजी भार्या मेनाबाई तत्पुत्र मंदासाजी पुस्तकपठनार्थं।।

- उतम देश वराड मझारमे कारंज रंजक हे पुर नीको।
  सत्य सुपारसदेव महा मूलनायक मूलसुसंघ सजीको।।
  सेनगणाश्रीत पुष्करगच्छ प्रधान सदा अति ग्राह गुणीको।।
  श्रीछत्रसेन रचै कवि चौपद द्रौपदीहरण चरित्र सुलीकौ।।

- देवलगाव पवित्र तिहा जिनमंदिर सोहे।
  चंद्रनाथनी मूर्ति देखि सुर नर मन मोहे।।
  सोलहसेत्तितरे अष्टापद वर्णन कियो।
  अर्जुनसुत इस उच्चर सुगंधदशमी पुरो थयो।।

- शके १५७४ नंदननाम संवत्सरे पौषमासे शुक्लपक्षे त्रयोदसितियौ गुरुवारे वराडदेशे श्रीमूलसंघे.. भ. धर्मचंद्र तत्पटे भ. धर्मभूषण तत्पटे भ. देवेन्द्र कीर्ति ... गंगराडाज्ञाति लघु नंदिग्रामे आदशेटी.. ताभ्यां स्वहस्ते लिखितं।।

CHAPTER-II

THE BIRTH OF THE SANGHAS, THE BHATTARAKA TRADITION AN ITS CONTRIBUTION TO JAIN ART

End Note No 7

- संवत १७८५ वर्षे शके १६५० कीलक नाम संवत्सरे माघमासि प्रतिपत्तिथौ सोमधूसे नवमससंपदे सूरति बंदिरे वासुपूज्यचैत्यालये गिरनारं यात्रा गमनसमये भ.श्री.धरमचंद्रपट्टधारि देवेंद्रकीर्तिभ्यः रामजी संघाधिप पुत्र आणंदनाम्रा हूंबड श्रावकेण दत्तमिदं पुस्तकम्।

End Note No 8

- संवत १७९४ शके १६५५ परमार्थी नाम संवत्सरे मिती भादवा वदि १० वार शुक्रवारे कृष्णपक्षे तद् दिने लिखित संघवी शीतल तद्भार्या संघवीन सकुबाईने लिखित स्वहस्तेन धर्मकार्य निमित्त पठनार्थ ज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थ शुभमस्तु मंगलमस्तु काष्ठासंघे चंद्रनाथ चैत्यालये बघेरवाल ज्ञाति।

End Note No 10

- सके १६४३ पौस वदि १२ शुक्रवारे भ. देवेंद्र कीर्ति सहित बघेरवाल जाती हिरासाह सुत हाससा सुत चागोवा सोनाबाई राजाई गोमाई राधाई मन्नाई सहित जात्रा सफल करी कारंजकर

(श्रवणबेलगोल शिलालेख संग्रह)

- नासिक त्रिंबक ग्राम समीप महागजपंथ धराधर सारं ।
ध्यान बले वसु कोडि मुनीस गया जिह कर्मजिती भवपारं ॥
षोडश पन्नास पोस समुज्जवल बीज तिथी दिननायकवारं ।
देवेंद्रकीर्ति नमे जिनरत्नयंद्राबुधिरूपविद्यार्थी संवार ॥

- भागलदेस महेंद्रपुरी तस संनिधि मांगि गिरी तुंगि तुंग ।
हलधर माधव कोडि तपोधन मुक्ति वरी करी कल्मषभंगं ।
शून्यशरान्वित पडविधु पौष त्रयोदश शुक्ल गुरुदिन चंगं ।
देवेंद्रकीर्ति नमे जिनरत्नचंद्राबुधिरूपवीरादिकसंग ॥

- गुज्जर देश सु तारंग पवर्त कोडिशिलोपरि कोडि मुनीसा ।
  कोडि अउध्द वली वरदत्त पुरः सर भेदि जवंजव खासा ।
  चंद्र शराधिक षोडश उज्वल पंचमि भार्गव मार्गक वासा ।
  देवेंद्रकीर्ति भट्टारक संग समेत नमे करि भूतल सीसा ।

- सोरट देश सुरेवतकाचल नेमि मुनीश बहत्तर कोडी ।
  काय पुरोग ऋषीशत योगी शिवंगय संसति वल्लरि तोडी ।
  पुष्प रवी वद वारसि इंदुशरर्तुकलेश समा अतिरूडी ।
  देवेंद्रकीर्ति भट्टारक संग समेत नमे करपंकज जोडी ।

- सोरट देश अरिंजय भूधर भूरिजिनेश्वर बिंब अनूपा ।
  पांडु सुत त्रय मोक्ष गया वसु कोडि तथा वर लाड सुभूपा ।
  एकशरान्वित षोडश वत्सर कालिम माघ चतुर्थि उडूपा ।
  देवेंद्रकीर्ति भट्टारक भाव समेत नमे शांतिसागर रूपा ॥

- संवत १७८७ वर्षे भादवा शुदि ७ शके । श्रीरस्तु । श्री सुरति
  बंदरे वासुपूज्यचैत्यालये लिखापितमिंद पुस्तकं श्रीमूलसंघे..
  मलयखेडसिंहासनाधीश्वर-कार्यरंजक पुरवासि भ.
  श्रीधर्मचंद्र देवास्तत्पट्टे भ. देवेंद्रकीर्तयस्तैर्लिखापितं
  आर्यिका श्रीपासमतिपरोक्षदत्त वित्तेन ॥

CHAPTER-III

JAINS & JAINISM IN THE DECCAN

End Note No 9

- शके १६७६ मिति आसोज वदि मंगलात्रयोदश्यां बुधवासरे श्रीमूलसंघे सूरस्थगणे पुष्कर गच्छे ऋषभसेनगणधरान्वये पारंपर्यायते भ.श्री. १०८ सोमसेन तत्पटे भ. जिनसेन तत्पटे भ. समंतभद्र तत्पटे भ.श्री. १०८ छत्रसेन तत्पट्टोदयाद्रिवर्तमान भ. नरेंद्रसेनैर्लिखितोयं जसोधरचरित्रं श्रीसूरत बंदरे आदिनाथ चैत्यालये। संवत १७९०॥

End Note No 10

- श्रीमत देवेंद्रकीर्ति मुनि । भावे वंदिला कर जोडूनि ।
  जिनसागराच्या ध्यानी मनी । जिवाहून आवडे ।
  काही गुजराती रास। पाहून केले कथेस ।
  काही उत्तर पुराणास। पाहोनि ग्रंथास रचिले ।
  शके सोळाशे सहासष्ट जाण। आनंद नाम संवत्सर महान।
  वैशाखमास द्वादशी दिन । कथा पूर्ण ही झाली।
  जेथे शिरड नाम नगर शांतिनाथाचे मंदिर॥
  श्रावक लोक वसती अपार। सांगे जिनसागर श्रोतियासी।

End Note No 12

- सके १६४३ पौस वदि १२ शुक्रवारे भ. देवेन्द्रकीर्ति सहित बघेरवाल जाती हिरासाह सुत हाससा सुत चागेवा सोनाबाई राजाई गोमाई राधाई मन्नाई सहित जात्रा सफल करी कारंजकर

(श्रवणबेलगुल शिलालेख)

CHAPTER-IV

THE PAINTED DOCUMENTS

PANCAKALYANAKA PATA

End Note No *33

- शके १५७७ क्रोधनामसंवत्सरे मार्गशिर्ष सुदी १० बुधे मूलसंघे पुष्करगच्छे सेनगणे भ. सोमसेनदेवाः तत्पट्टे भ.श्री. जिनसेनगुरूपदेशात बघेरवाळ ज्ञात सावला गोत्रे वीरासह भार्या. हिराई..॥

- शके १५८० मूलसंघे सेनगणे भ. जिनसेनोंपदेशात कारंजाग्रामे सा रतन ॥

- भट्टारक जिनसेनकी कीरति भई बहु ठौरा।
  रायमलसा पुत्र वंस हुंनड बडमंडन।
  राना देस विख्यात नगर सावलि सुभ स्तंभन॥
  पद्मनंदि गुरु राय पाय सेवे बालापन।
  चौदह विद्यानिधान बहोतरी कलाभूषण॥
  कारंजे नगरे सुभग सोमसेन पट उध्दऱ्यो॥
  जिनसेन नाम परगट भयो भट्टारक जग उध्दऱ्यो॥
  संघप्रतिष्ठा पाच धर्म उपदेस सु कारी।
  श्रीगिरनारि समेदशिखर तीरथ कियो भारी।
  संघपति सोयरासाह निंबासा माधवसंगवी।
  गनबा संगवी रामटेकमा कान्हा संगवी॥
  जिनसेन नाम गुरुरायणे संघतिलक एते दिय।
  माणिक्यस्वामी यात्रा सफल धर्म काम बहु किय॥

- मूलसंघ कुलतिलक गच्छ पुष्करमे सोहे।
  चारिय गणमे मुख्य सेनगण महिमा मोहे॥
  भट्टारक जिनसेन गुरु मोरपीछ हस्ते धरे।
  पूरनमल यो कहे भव्यलोक तारण तरण॥

CHAPTER-IV

THE PAINTED DOCUMENTS

SUGANDHADASAMI KATHA - NAGPUR

End Note No 3

- सूरत शहर चवमासमे रूपचंदने स्तुति करी।
  ज्याको पिता बनारसी आगराको वासी
  सूरत शहर में उदीमके लीयते।
  वराड के मुनिंद आये रहे वरखाकालमाहे
  वंदना नहीं कीनेही देखी परीग्रहते।।
  सुध्दज्ञानसो निहास तुर्व काल मन विचार
  काय मन वचनसो चिदानंद लहेते।
  ऐसे देवेंद्रकीर्ति जिवनदास करत बिनती
  संभाल लेवो परभावमें मोह निकट आयते।